नशीली दवाओं की संस्कृति के प्रभावों के प्रति संवेदनशील छात्रों के व्यक्तित्व, बुद्धि, नैतिकता, और वित्तीय और शैक्षिक स्थिति पर अध्ययन

दिवाते आशा विश्वनाथ[1] डॉ. रामधन भारती[2]

[1]शोधार्थी [2]शोध पर्यवेक्षक

ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय

शिक्षा विभाग

Email:- varpeajeet@yahoo.com

सारांश

नशीले पदार्थों के दुरुपयोग और अत्यधिक शराब के उपयोग के मुद्दे ने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के अन्य देशों में भी विकराल रूप धारण कर लिया है। हालाँकि, इतिहास बताता है कि यह लंबे समय से वहाँ है। यह केवल लोगों के ध्यान में आया है और इसे एक मनोवैज्ञानिक मुद्दे के रूप में पहचाना गया है। यह माना जाता था कि व्यक्ति में आदर्शों और अपनी इच्छा को लागू करने की क्षमता का अभाव था, जो इसका आधार था।

हालाँकि, सच्चाई यह है कि हम इस समय उन्हें पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। इस विशेष स्थान पर ज्यादा काम नहीं किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सब अनुचित समायोजन का परिणाम है। किसी व्यक्ति के जीवन में आंतरिक और बाहरी दोनों तरह के तनाव होते हैं, और ये तनाव व्यक्ति को नियमित काम करने से रोकते हैं, भले ही वह सामान्य काम करना चाहता हो।

इस अध्ययन में कुल नौ लक्ष्य थे, जिनमें से अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण यह निर्धारित करना था कि नशीली दवाओं और शराब के व्यसनी किशोर छात्र हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, परिकल्पना विकसित की गई– नशीली दवाओं और शराब के नशेड़ी अपनी लत तब शुरू करते हैं जब वे छात्र होते हैं।

अलग–अलग शोधों, अस्पतालों की रिपोर्ट, या अन्य स्रोतों से संकलित कोई भी सबूत 24 या 25 साल से अधिक पुराना नहीं था। इस स्थिति में, किसी की भावनाओं का उनके तर्कसंगत संकायों की तुलना में अधिक प्रभाव होता है।

इस वजह से, इन व्यक्तियों को अनैतिक व्यवहार जैसे चोरी, डकैती, तस्करी और इसी तरह के अन्य कार्यों में शामिल होना आसान लगता है। ये व्यवहार पचास वर्ष की आयु के बाद स्थापित

नहीं होते हैं। इस विशेष सेटिंग में, उन्होंने कहा कि उम्र और अनुभव के साथ बढ़ने के अलावा, तर्क करने की क्षमता भी 50 या उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों में बढ़ती है। इस कारण व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम होता है।

इच्छाशक्ति एक और अविश्वसनीय रूप से मजबूत गुण है। वह उसे इन गतिविधियों में शामिल होने से भी रोकती है। वे इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में मादक द्रव्यों के सेवन और मद्यपान की समस्याओं को विकसित करने से बचते हैं। इस परिकल्पना को उसी समय मान्य किया गया था जब पूर्वोक्त लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया था।

विषय संकेतः— नशीली दवाएं, नशीले पदार्थ

परिचय

समस्या का सूत्रपात—

भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी नशीली दवाओं तथा मदात्ययी के सेवन की समस्या एक विक्रान्त रूप ले चुकी है। फिर भी इतिहास ये मानता है, कि यह नया नहीं है, लेकिन अभी हाल ही में इसकी ओर ध्यान गया है और यह माना जाता है, कि यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। इसका कारण यह माना जाता था, कि व्यक्ति में आदर्श तथा इच्छा शक्ति की कमी होगी। लेकिन वास्तविकता यह है, कि अभी इनको समझा नहीं गया है।

इस क्षेत्र में बहुत कम कार्य किया गया है। यह निश्चित है, कि यह सब कुसमायोजन के कारण ही होता है। व्यक्ति के जीवन में आन्तरिक और वाह्य तनाव होते हैं, जो उसे सामान्य कार्य नहीं करने देते, लगता है, इतना निश्चित है, कि वह इसके लिये प्रयास करता है।

यहाँ तक कहा गया है, कि एक बार भी इस मादक द्रव्य के प्रति आसक्ति हो जाये, तो वह कठिनाई से ही छूटती है। वह अस्वाभाविक रूप से नशे पर ही निर्भर रहता है। यह निर्भरशीलता निश्चित रूप से उसके लिये हानिकारक सिद्ध होती है। पहले तो वह कम मात्रा में इनका उपयोग करता है, तत्पश्चात् मात्रा अधिक हो जाती है। इन व्यक्तियों को दो भागों में बाँट सकते है—

1. मानसिक निर्भरशीलता आसक्ति
2. शारीरिक निर्भरशीलता बीमारी

शारीरिक रूप से जो व्यक्ति इन वस्तुओं के सेवन का आदि हो जाता है तब बड़ी विशेष प्रकार की बेचौनी अनुभव करता है जैसे सम्पूर्ण शरीर में दर्द आँखों से पानी आना अथवा केवल हाथ पैरों में दर्द होना अथवा इतनी बैचेनी का अनुभव करना जिसमें कोई भी सन्तुलन न हो पाये।

जिन विद्यार्थियों में नशीली दवाओं के सेवन की तथा मधपान के प्रयोग की आदत पड़ जाती है। तब उसका सामजस्य हो ही नहीं पाता है।

एतिहासिक दृष्टिकोण

एतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो लगता है, ''कारण कुछ भी रहा हो लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है,'' कि लगभग 30 साल पूर्व शुरू हुई इस प्रक्रिया ने अब एक विशाल हत्यारी लहर का रूप धारण कर लिया है।

यह थोड़ा आश्यर्चजनक लग सकता है। लेकिन इंग्लैण्ड को ही प्रथम मादक द्रव्य का व्यापारी कहा जा सकता है। बिट्रिश व्यापारियों ने उन्नीसवीं शताब्दी में चीन को शब्दशः नशे की मूर्च्छाओं में डूबो दिया था, वह चीनी रेशम और चाय के बदले उपनिवेश भारत में उगाई गयी अफीम को पहुँचाते थे।

इस व्यापार से बिट्रिश अधिकारियों ने बड़ा लाभ कमाया, क्योंकि भारत में सरकारी राजस्व का 15ः अफीम बिक्री से मिलता था। इससे ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने भी भारी लाभ कमाया और चीनी अधिकारियों को रिश्वत भी दी जाती थी।

नशे का यह भूत सवार होने के बाद चीन क्विंग राज परिवार ने एक के बाद एक राजज्ञायें जारी की, लेकिन इसका 1839 तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा जब तक कैन्टन बन्दरगाह पर पश्चिमी जहाजों के एक काफिले को बन्दी कर नहीं लिया गया था। फिर एक रात को एक बिट्रिश नाविक ने कलह में एक चीनी का कत्ल कर दिया।

समस्या का चयन–

मदात्ययी संवेदनमन्दक–औषधी व्यसनी छात्रों की बुद्धि समायोजन, व्यक्तिगत–मूल्य, तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

समस्या का स्पष्टीकरण –

इस समस्या में प्रयोगब किये हुये शब्दों के अर्थ निम्न माने गये है–

(अ) मदात्ययी–

ऐसे व्यक्ति जो मदिरापान हेतु बाध्य होते हैं, और इसके बिना वे जीवित नहीं रह सकते हैं। इसके सेवन हेतु इसकी बड़ी प्रबल इच्छा होती है।

(ब) संवेदनमन्दक–औषध–व्यसनी–

ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक तथा मानसिक–स्थिति के परिवर्तन हेतु कुछ पदार्थो का सेवन करते हैं और इसके बिना वे जीवित नहीं रह सकते और इसका प्रभाव उसके जीवन पर आता है। वह सामाजिक व्यवहार की अवहेलना करते हैं, और भय नहीं होता है, यदि रोना प्रारम्भ कर दें तो वे घन्टों रोते रहेंगे।

(स) छात्र–

कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के नियमित छात्र एवम् छात्राओं को स्वीकार किया गया।

(द) बुद्धि–

वैश्लर के अनुसार ''व्यक्तित्व के अन्य पक्षों से बुद्धि को पृथक नहीं किया जा सकता वह व्यक्ति की सर्वाडीण क्षमता है। जिसके अनुसार उसमें सौद्देश्यपूर्ण आचरण विवेकपूर्ण–चिन्तन तथा पर्यावरण से प्रभावी रूप से निपटने की क्षमता होती है।''

(य) समायोजन–

लारेन्स एण्ड शेफर के अनुसार ''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वार एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं आर इनकी तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन बनाये रखता है।''

(ल) व्यक्तिगत मूल्य –

प्रत्येक मानव को अपने जीवन में कुछ अनुभव होते हैं जो समय की गति के साथ–साथ विस्तृत हो जाते हैं इन्हीं में से सामान्य रूप से सैद्धान्तिक वाक्य होते हैं जो व्यक्ति के विशेष व्यवहार को निर्देशित करते हैं और वही सिद्धान्त उसके समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा जीने की विशिष्ट कला को जन्म देते हैं एवंम् उसके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। इन्हीं को व्यक्तिगत–मूल्य कहा गया है।

समस्या का चयन–

मदात्ययी संवेदनमन्दक–औषधी व्यसनी छात्रों की बुद्धि समायोजन, व्यक्तिगत–मूल्य, तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

समस्या का स्पष्टीकरण –

इस समस्या में प्रयोगब किये हुये शब्दों के अर्थ निम्न माने गये है–

(अ) मदात्ययी–

ऐसे व्यक्ति जो मदिरापान हेतु बाध्य होते हैं, और इसके बिना वे जीवित नहीं रह सकते हैं। इसके सेवन हेतु इसकी बड़ी प्रबल इच्छा होती है।

(ब) संवेदनमन्दक–औषध–व्यसनी–

ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक तथा मानसिक–स्थिति के परिवर्तन हेतु कुछ पदार्थों का सेवन करते हैं और इसके बिना वे जीवित नहीं रह सकते और इसका प्रभाव उसके जीवन पर आता है। वह सामाजिक व्यवहार की अवहेलना करते हैं, और भय नहीं होता है, यदि रोना प्रारम्भ कर दें तो वे घन्टों रोते रहेंगे।

(स) छात्र–

कालिज तथा विश्वविद्यालय के नियमित छात्र एवम् छात्राओं को स्वीकार किया गया।

(द) बुद्धि–

वैश्लर के अनुसार ''व्यक्तित्व के अन्य पक्षों से बुद्धि को पृथक नहीं किया जा सकता वह व्यक्ति की सर्वाडीण क्षमता है। जिसके अनुसार उसमें सौद्देश्यपूर्ण आचरण विवेकपूर्ण–चिन्तन तथा पर्यावरण से प्रभावी रूप से निपटने की क्षमता होती है।''

(य) समायोजन–

लारेन्स एण्ड शेफर के अनुसार ''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वार एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं आर इनकी तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन बनाये रखता है।''

(ल) व्यक्तिगत मूल्य –

प्रत्येक मानव को अपने जीवन में कुछ अनुभव होते हैं जो समय की गति के साथ–साथ विस्तृत हो जाते हैं इन्हीं में से सामान्य रूप से सैद्धान्तिक वाक्य होते हैं जो व्यक्ति के विशेष व्यवहार को निर्देशित करते हैं और वही सिद्धान्त उसके समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा जीने की विशिष्ट कला को जन्म देते हैं एवंम् उसके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। इन्हीं को व्यक्तिगत–मूल्य कहा गया है।

मद्यपान के प्रभाव–

1. मद्यपान करने वालों पर प्रभाव निम्न प्रकार होते है–
2. उत्तेजक का कार्य करता है।

3. यह अब साधक का कार्य करता है।

4. मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों पर एकदम प्रभावित करता है।

5. व्यवहार के उच्च केन्द्रों पर एकदम प्रभावित करता है।

6. नियन्त्रण शिथिल हो जाता है।

7. आवेगो ंको सन्तुष्ट करने का प्रयास करता है, जो सामान्य में नहीं कर पाता है।

8. चलने में लड़खड़ाहता आ जायेगी। ब्राउन का कहना है, कि 10 वॉल तक पिला दी जाये तो व्यक्ति की मृत्यु भी हो जाती है।

9. मद्यपान से उच्च मस्तिष्क कार्य करना बन्द कर देता है। इसीलिये चिन्तायें अपने आप समाप्त हो जाती हैं। वह सो भी जाता है। बोलने में भी उसकी मांसपेशियों पर प्रभाव होता है, इसलिये ठीक से बोल नहीं पाता है।

10. व्यक्ति अधिक पीने से मूर्च्छित हो सकता है। और प्राण घातक भी हो सकता है।

11. नशा इस बात पर भी आधारित है। कि व्यक्ति मद्यपान करने में कितना समय लगायेगा।

12. शराब पीने के बाद अत्यन्त झगड़ालू होते हैं। इसके बाद भोजन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

13. मद्यपान का सेवन करने से सर्वप्रथम जिगर पर प्रभाव होता है। अन्त में जिगर जब खराब हो जाता है। एक ऐसी स्थिति आ जाती है, कि उसे शराब की आवश्यकता होती है। जिसको सिरोसिस कहते हैं। और उसी में उसकी मृत्यु हो जाती है।

14. शराब पीने वालों में इसकी मात्रा धीरे–धीरे बढ़ती है। फिर इसकी क्षमता बढ़ती जाती है, घोर पियकड़ बन जाते हैं। यदि न पिये तो बेचैनी, सिरदर्द, तनाव और आकुलता में वृद्धि होती है।

15. उसमें भ्रम भी पैदा हो जाता है।

16. यदि कोई व्यक्ति बहुत दिनों तक मदिरा का सेवन करता रहा हो वह बीमार हो जायेगा। कम्पन हाथ तथा होटो पर आरम्भ हो जाता है। वह सामान्य रूप से कार्यो को नहीं कर सकता। इसकी स्मृति भी भ्रमित हो जाती है।

17. अधिक पीने से उल्टी और दिल का दौरा भी पड़ जाता है।

उद्देश्य–

इस शोधकार्य के निम्न उद्देश्य थे–

1. यह ज्ञात करना कि क्या नशीली दवाओं की संस्कृति के प्रभावों के प्रति संवेदनशील छात्रों में बुद्धि कम होती है।

उपकरण–

इस शोधकार्य में निम्न उपकरण प्रयोग में लाये गये थे–

1. बुद्धिमापक परीक्षण–डा0 एस0एस0 जलोटा
2. समायोजन प्रश्नावली–अस्थाना
3. व्यक्तिगत–मूल्य प्रश्नावली–शैरी तथा वर्मा
4. सामाजिक–आर्थिक–स्तर परीक्षण–कुप्पू स्वामी

शोधकार्य विधि–

इस शोधकार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण–विधि का प्रयोग किया गया, चूँकि इस समस्या का अध्ययन वर्तमान समय में होगा और वर्तमान में ही यह देखा गया कि मदात्ययी तथा नषीली दवाओं –व्यसनी का बुद्धि सांमजस्य, व्यक्तिगत–मूल्य तथा शैक्षिक–उपलब्धि का अध्ययन। सब कुछ वर्तमान में ही हुआ और इनकी तुलना भी सामान्य छात्रों से की गयी जो भी निष्कर्ष प्राप्त हुये उन्हीं के अनुरूप सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

तालिका

सामान्य तथा असामान्य दोनों समूहों के बुद्धि के मध्यमान तथ प्रमाणित विचलन

क्रमांक	संख्या	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक–विचलन
1.	300	सामान्य	107.5	7.5
2.	100	असामान्य	105.5	4.4

इतना निश्चित है, कि सामान्य समूह की अपेक्षा असामान्य समूह में बुद्धि कम थी।

बुद्धि के मध्यमानों के अन्तरों का आलोचनात्मक अनुपात–

चार समूहों में जो सामान्य छात्र थे, उनके मध्य आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किये गये थे, जो

निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रदर्शित किये गये हैं–

तालिका

चारों समूहों के मध्य बुद्धि के मध्यमानों के अन्तरों का आलोचनात्मक अनुपात।

क्रमांक	समूहों के नाम	छात्र–कला	छात्र–विज्ञान	छात्रायें कला	छात्रायें विज्ञान
1.	छात्र–कला		.69	1.68	2.19
2.	छात्रायें–विज्ञान			1.02	1.54
3.	छात्रायें–कला				.50
4.	छात्राये–विज्ञान				

व्याख्या–उपर्युक्त आलोचनात्मक अनुपात के इन मूल्यों में से केवल एक मूल्य जो छात्र कला वर्ग तथा छात्रायें विज्ञान वर्ग के मध्यमान का अन्तर महत्वपूर्ण है। यह 2.19 है, जो कि 0.5 स्तर पर महत्वपूर्ण है।

यह निश्चित है, कि कलावर्ग में ऐसे छात्रों के प्रवेश हो जाते हैं, जिनके अंक, प्रतिशत निम्न श्रेणी के होते हैं, जबकि विज्ञान वर्ग ?

व्याख्या–

यदि सामान्य रूप से देखा जाये, तब इन दोनों समूहों की बुद्धि के मध्य 1.8 का अन्तर था। यह बहुत बड़ा अन्तर नहीं लगता है। लेकिन अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये यह आवश्यक था, कि इन दोनों समूहों के मध्य आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किये जायें, और यही किया गया।

प्राप्त परिणामों के अनुसार आलोचनात्मक अनुपात 3.30 था, जो कि .01 स्तर पर भी सार्थक था, अर्थात् इन दोनों समूहों को देखने पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि सामान्य समूह की बुद्धिलब्धि असामान्य समूह से अच्छी थी। इनके मध्य की गई गणना भी स्पष्ट रूपेण संकेत देती है।

यहाँ पर वास्तविक आंकड़े तो नहीं, लेकिन अनुमानतः यह कहा जा सकता है, कि जिन लोगों में बुद्धि अधिक होती है, उनमें सामजस्य करने की क्षमता अधिक रहती है। उनमें सन्तुलन बना

रहता है, असन्तुलन होना, इस बात का घोतक है, कि उनमें बुद्धि कम है, इसीलिये समायोजन भी कम है।

यह निश्चित है, कि असामान्य समूह में बुद्धि सामान्य समूहों के बराबर अथवा उससे अधिक होती, तब उनमें समायोजन भी अच्छा होता। बुद्धि के कम होने पर व्यक्ति दूसरों के दिये गये सुझावों की परख नहीं कर सकते, उन्हें जैसा कहा जाता है, उसे वह मान लेते हैं।

सम्भव है, कि यह किसी परेशानी मे फंसा हो, और इनके ऐसे ही मित्र कहे जाने वाले व्यक्ति परेशानी से बचने के लिये दोनों चीजों का सुझाव दे चुके हों। जैसे—यदि तुम मदिरा पीओगे, तब तुमको मानसिक खिंचाव नहीं रहेगा, अथवा नशीली दवाओं का सेवन करोगे, तब तनाव नहीं रहेगा।

ऐसे छात्रों का प्रवेश सिफारिश के आधार पर या भाई भतीजावाद के आधार पर होता है। इसीलिये यह अन्तर ही केवल महत्वपूर्ण था, बूद्धि के आधार पर महिला या पुरूष दोनों के मध्यमानों में अन्तर सार्थक नहीं होते हैं।

बुद्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर न होने का तात्पर्य यह नहीं, कि एक कारण बुद्धि ही हो, कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं। जिनको यहाँ पर नहीं देखा गया है, जैसे—बुद्धि के घटक।

तालिका

चारों समूहों के मध्यपारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के मध्यमानों के अन्तरों का आलोचनात्मक अनुपात—

क्रमांक	समूहों के नाम	छात्र—कला	छात्र—विज्ञान	छात्रायें कला	छात्रायें—विज्ञान
1.	छात्र कला		1.04	1.06	.70
2.	छात्र—विज्ञान			.02	.36
3.	छात्रायें—कला				.39
4.	छात्रायें—विज्ञान				

व्याख्या—इस तालिका में छः आलोचनात्मक अनुपात निकाले गये हैं। इनमें से एक भी अनुपात

सार्थक अन्तरों को प्रदर्शित नहीं करता है। इन छात्र छात्राओं की संख्या 300 थी। इससे स्पष्ट है, कि सामान्य बालकों में घर की पारिवारिक प्रतिष्ठा सामान्य रूप से प्रतिष्ठित थी। उनके मस्तिष्क के चेतन भाग में उस प्रतिष्ठा का महत्व था।

जबकि शराबी नशीली दवाओं व्यसनी छात्रों के विषय में यही कहना तर्क संगत नहीं लगता है। इसके कारण विषय में ऊपर ही संकेत दिया जा चुका है, फिर भी एक बात निश्चित है, कि शराब तथा नशीली दवा न तो स्थायी रूप से किसी प्रसन्नता में वृद्धि करता है और न किसी दुख को कम करता है, जो भी होता है। वह अस्थायी होता है वैसे भी जो व्यवहार संवेदनों पर आधारित होता है। वह स्थायी नहीं होता है, केवल अस्थायी होता है।

निष्कर्ष तथा सुझाव

प्रस्तावना– विश्लेषण तथा निर्वचन के अध्याय में प्रस्तुत शोधकार्य समूह तो कानपुर के महाविद्यालयों से लिया गया था। जबकि सौ छात्र जिनको असामान्य कहा गया है, ये व्यक्ति मादक द्रव्य के आदी थे, इनके बिना रह नहीं सकते थे, और इनका उपचार किया गया था। इनकी सूची विभिन्न स्थानों से जिनमें मुख्य थे। कानपुर गाजियाबाद, दिल्ली भरतपुर और मानसिक चिकित्सालय के नामों की सूची ली तथा इनके घरों पर या इनके रहने के स्थानों पर अत्यन्त कठिनाई के बाद इनको परीक्षण दिये जा सके। कुछ प्रश्नों की सूची जो इस शोधकार्य के तीसरे अध्याय में प्रस्तुत की गई है, वह भी प्रयोग में लायी गयी लेकिन उत्तर मिलने में भी बड़ी कठिनाई हुई उनमें से मुख्य निम्न थी–

1. व्यक्ति प्रश्नों के उत्तर देने में संकोच करता था।
2. लगता है, सभी उत्तर उसने सही नहीं दिये।
3. वह भय मुक्त नहीं था।
4. जिन स्थानों से मदात्ययी तथा संवेदनमन्दक औषधियाँ ली जाती थीं। उन स्थानों के नाम नहीं बताये।
5. उन व्यक्तियों के नाम भी नहीं बताये, जिनसे उन्हें ये मादक पदार्थ मिलते थे।
6. कहाँ से धन जुटाते थे, इस सन्दर्भ में भी उत्तर ठीक नहीं मिल पाये।
7. ऐसी स्थिति में जो भी तथ्य एकत्रित हो सके, उन्हें एकत्रित करने के पश्चात विश्लेषण किया गया। इसी विश्लेषण के आधार पर यह देखा गया कि–

(ए) जो भी उद्देश्य शोधकार्य के थे, उनका क्या हुआ ?

(वी) जो उपकल्पनायें कार्य आरम्भ करने के पूर्व बनायी गयी थीं, उनका क्या हुआ?

(सी) शोध के क्या परिणाम प्राप्त हुये ?

उद्देश्य तथा परिकल्पनायें–

इस शोध का प्रथम उद्देश्य था ''यह ज्ञात करना'' क्या नषीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्रों में बुद्धि कम होती है ? इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये निम्न उपकल्पना बनायीं गयी थी–नषीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्रों में बुद्धि सामान्य होती है। यह परिकल्पना स्वीकार नहीं की गई। सामान्य समूह के चार भाग किये गये, छात्र कला, छात्र–विज्ञान, छात्रायें कला, छात्रायें विज्ञान। असामान्य समूह के कोई भाग नहीं किये गये।

लेकिन सामान्य समूहों की बुद्धि को नापा गया था। इनके मध्यमान निकाले गये, साथ ही साथ प्रमाणिक विचलन भी निकाले गये, क्योंकि इनके बिना आलोचनात्मक अनुपात नहीं निकाला जा सकता था। असामान्य छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किये गये जब आलोचनात्मक अनुपात निकाले गये, वह महत्वपूर्ण थे। इससे स्पष्ट है कि अन्तर सार्थक थे। यदि ऐसा न होता और उनकी बुद्धि भी उच्च की होती।

तब परिकल्पना की जा सकती थी, कि वह इस दुर्व्यसन में न फंसते और दूसरे सामान्य लोग जिस तरह से कार्य करते, वैसे ही वे भी करते। लगता ऐसा है, कि कहावत सहीं है, कि मूर्ख को सरलता से मूर्ख बनाया जा सकता है। औषध विक्रताओं ने इन्हें अपने चंगुल में फंसा लिया। यह भी सम्भव है, कि व्यक्ति क्षणिक आनन्द के लिये किसी गलत काम को बड़ी सरलता से कर लेता है, जैसे शराब, नशीली दवाइयाँ, विष का कार्य करती हैं। लेकिन व्यक्ति तुरन्त प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये इस विष को भी ग्रहण कर लेता है।

सैकड़ों शोधकार्य ऐसे हुये हैं, जिनमें कहा गया है कि जो भी नशेड़ी है। उनकी बुद्धि सामान्य से कम होती है। इनके मध्य आलोचनात्मक अनुपात भी 3.30 था जो .01 स्तर पर सार्थक था।

इस कार्य का दूसरा उद्देश्य यह था, कि क्या इन छात्रों में पारिवारिक, सामाजिक विद्यालय आदि के प्रति उचित समायोजन नहीं होता है ? इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु द्वितीय परिकल्पना यह थी कि नशीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्रों में पारिवारिक, सामाजिक विद्यालय आदि के प्रति समायोजन सामान्य नहीं होता है।

यह सही है। कि इन व्यक्तियों में समायोजन की कमी होती है। जो बालक सामान्य रूप में समायोजित होते हैं, उनमें इस प्रकार की आदते नहीं आ पाती है। परन्तु जिनमें यह नहीं होता, तब अनेक समस्यायें जन्म लेती हैं। उन समस्याओं के समाधान करने में बहुत समय लगता है, परन्तु ये लोग तुरन्त परिणाम चाहते हैं। फलतः यह होता है कि एक समस्या के समाधान करने में अनेकों समस्याओं में उलझ कर रह जाती हैं। उनसे निकल भी नहीं पाते हैं। तनाव उत्पन्न होता है, उसे दूर करने के लिये नशा करना आरम्भ कर देते हैं। यह नशा किसी समस्या को तो दूर नहीं करता है वरन् अनेक अन्य नयी समस्यायें पैदा कर देता है। इस कारण जो भी समायोजन होता है।

उसे समाप्त कर अन्य तनाव बना देता है। सामान्य लोगो में यह नहीं होता है वे अपनी समस्याओं के समाधान तलाश कर लेते हैं। चार समूह समान्य थे, उनमें कोई भी अन्तर महत्वपूर्ण नहीं था। जब सामान्य छात्रों की तुलना इन लोगों से की गई तो आलोचनात्मक अनुपात 30.7 प्राप्त हुआ। इसका अर्थ था कि अन्तर अति सार्थक थे। जब किसी समस्या का समाधान प्राप्त करने में अनेक अन्य समस्यायें आ जायें जिनका व्यक्ति समाधान नहीं कर पाता है तब असामान्य व्यवहार आ जाता है। यहाँ पर ऐसा ही हुआ लगता है।

इस प्रकार की स्थिति में यह स्वीकार करना ही होगा कि इन व्यक्तियों में पारिवारिक सामाजिक विद्यालय आदि के प्रति समायोजन सामान्य नहीं होता है। इस प्रकार दूसरे उद्देश्य की प्राप्ति के साथ ही साथ दूसरी उपकल्पना को स्वीकार किया गया था यह मानलिया गया कि इन में समायोजन किसी भी प्रकार से सामान्य नहीं होता है। यदि ऐसा ही होता है, तो फिर कोई समस्या ही नहीं होती।

इस कार्य का तृतीय उद्देश्य निम्न था–''यह ज्ञात करना क्या ऐसे व्यसनी छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य निम्न स्तर के होते हैं?'' इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये परिकल्पना बनायी गयी थी।

वर्तमान शोधकार्य में शैरी तथा वर्मा के परीक्षण को प्रयोग में लिया गया था। सामान्य छात्र–छात्राओं ने इस परीक्षण को सरलता पूर्वक भर दिया परन्तु असामान्य समूह से इसके तथ्य एकत्रित करने में अत्यन्त कठिनाई का अनुभव हुआ।

ज्ञानात्मक मूल्य में सामान्य तथा असामान्य समूहों में अन्तर महत्वपूर्ण नहीं था। लेकिन

छात्र कला तथा छात्रायें कला में यह अन्तर सार्थक थे। छात्राओं के विज्ञान तथा कला समूहों सार्थक थे। नशीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्र–छात्राओं में सुखवरण मूल्य अधिक था। शक्तिशाली मूल्य में भी छात्र–छात्राओं में अन्तर थे। अन्य मूल्य भी समान नहीं थे।

इस उपकल्पना को पूर्ण रूपेण स्वीकारा नहीं किया गया परन्तु तृतीय उद्देश्य की पूर्ति निश्चित हो गयी। इस शोधकार्य का चतुर्थ उद्देश्य था ''कि'' क्या नषीली दवाओं व्यसनी और मदात्ययी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्नस्तर की होती है?

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु तथ्य एकत्रित किये गये थे। यदि बौद्धिक स्तर तथा इनके समायोजन को अलग कर दें, तब सामान्य समूह का तथा असामान्य समूह की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में तुलना करना मूर्खता होगी। इसके अन्तर सदैव महत्वपूर्ण होंगे। असामान्य समूह सामान्य समूह के बराबर अथवा समान कभी नहीं होगा। जब शैक्षिक उपलब्धि समान्य नहीं होगी ऐसी स्थिति में कैसे कहा जा सकता है, कि इन दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि समान होगी? सामान्य छात्र–छात्रायें पढ़ने का भी कार्य सुचारू रूप से करते हैं।

पर्याप्त समय पुस्तकालय, पुस्तक में, अध्यापकों से वार्तालाप में तथा अपने साथियों से इसी सन्दर्भ में विचार विमर्श करते हैं। कुछ गोष्ठियों का आयोजन करते हैं। गृहकार्य अथवा स्वयं अध्ययन को पर्याप्त समय देते हैं। इसके विपरीत असामान्य छात्र–छात्रायें महाविद्यालयों में भगोड़े बन जाते हैं। यह व्यवहार उपचारी बालाकों के लिये मूल रूप में उत्तरदायी है। भगोड़े बालक की कभी भी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी नहीं होती है।

वह वैसे ही भगोड़ों के साथ आता है, जुआ खेलता है, सिनेमा देखता है आदि कार्य करता है। इसीलिये यह बालक पढ़ाई लिखाई पर ध्यान नहीं दे सकता है। सामान्य छात्र कला एवं छात्राओं कला के मध्य शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर थे। दिल्ली, इलाहाबाद परिषदों के परिणामों में भी लगभग यही परिणाम दिखाई देते हैं। मदात्ययी तथा औषध व्यसनी छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि में कोई तुलना नहीं थी। उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की थी।

इस प्रकार इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ–साथ यह परिकल्पना भी स्वीकार की गयी थी। इस शोधकार्य का पंचम उद्देश्य यह ज्ञात करना कि क्या सामान्य छात्रों की अपेक्षाकृत इनमें बुद्धि, समायोजन व्यक्तिगत मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि बनायी गयी थी। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया था–'औषध व्यसनी छात्रों की और सामान्य छात्रों की बुद्धि समायोजन वैयक्तिगत मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि सामान्य नहीं होती है''।

डा0 एन0एस0 चौहान 'टूयेन्सी उमंग गोइंग वोइज', पी0एची0डी0, आगरा विश्व विद्यालय आगरा, श्री राम मेहरा एण्ड कम्पनी आगरा।1968

इस परिकल्पना को स्वीकार किया गया और इसके कारण परिकल्पना नं0 1 2 3 तथा 4 उपकल्पनाओं के सन्दर्भ में इसकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की जा चुकी है। यह चारों ही चर ऐसे हैं जो स्वयं में महत्वपूर्ण हैं। इनकी शैक्षिक उपलब्धि समायोजन वैयक्तिगत मूल्य एक से हो नहीं सकते, यदि एक से होते तब वह मदात्ययी ही नहीं होते।

इस शोधकार्य का षष्ठ उद्देश्य यह ज्ञात करना, कि क्या औषधव्यसनी छात्रों की बुद्धि समायोजन वैयक्तिगत मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध होते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के हेतु निम्न परिकल्पना की गयी थी। 'इस औषध व्यसनी छात्रों की बुद्धि समायोजन वैयक्तिगत मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध होता है।'

चार मूल्यों में तो सकारात्मक सह–सम्बन्ध था, परन्तु बहुत उच्च के नहीं थे जबकि छः मूल्यों से सह सम्बन्ध नकारात्मक थे अथवा निरर्थक थे। इसीलिये यह तो स्वीकार नहीं किया जा सकता, कि शैक्षिक उपलब्धि से मूल्यों का सह–सम्बन्ध था। शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा बुद्धि के मध्य सह–सम्बन्ध सकारात्मक थे। इस उपकल्पना को पूर्णरूपेण तो नहीं लेकिन आधा स्वीकारा गया था।

इस शोधकार्य का सप्तम उद्देश्य यह ज्ञात करना था, कि 'छात्र एवम् छात्राओं के मध्य क्या महत्वपूर्ण अन्तर होते हैं। इसके साथ–साथ परिकल्पना यह की गयी थी' कि ऐसे छात्र–छात्राओं के मध्य कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं होता है।

यहाँ ऐसे शब्द से तात्पर्य असामान्य समूह से है। जब यह दोनों ही शराबी तथा औषध व्यसनी है तो इनके मध्य अन्तर नहीं होने चाहिये। इस कार्य में छात्राओं की संख्या छात्रों की अपेक्षा कम थी। इससे उनका कोई अलग समूह नहीं बनाया गया था। इसमें पहला अन्तर यह है, कि छात्र–छात्राओं की अपेक्षाकृत मदात्ययी अधिक होते हैं। नशीली औषधियाँ के सेवन लड़कों की अपेक्षाकृत छात्रायें अधिक करती हैं। इसकाा कारण यह है, कि नशीली दवाइयाँ सरलता पूर्वक छात्राओं को प्राप्त हो जाती हैं, इनको बड़ी सरलता से छिपा सकती है। एक प्लास्टिक की थैली में बन्द करके उन्हें गुप्तस्थानों पर भी रखा जा सकता है। ऐसी बहुत सी रपट कस्टम अधिकारियों ने समाचार पत्रों के माध्यम से दी है।

शैघिक उपलब्धि जो छात्र–छात्राओं की थी उनमें भी अन्तर नहीं था। सामंजस्य का

प्रश्न है उसमें भी अन्तर था। उनके व्यक्तिगत मूल्यों में भी बहुत बड़े अन्तर की सम्भावना नहीं थी। छात्राओं की संख्या कम थी, क्योंकि प्रतिबन्ध था। छात्रों की संख्या अधिक थी, क्योंकि उन पर प्रतिबन्ध नहीं था।

उद्देश्य यह ज्ञात करना था, कि 'नशीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्रा का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च का होता है। इसके साथ परिकल्पना यह थी, कि 'नशीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्रों का सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च का होता है।

यह परिकल्पना स्वीकार की गई थी यह तो निश्चित है, कि नशीली औषधियों का सेवन केवल वही व्यक्ति कर सकते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो। विदेशी शराब तथा नशीली औषधियाँ बहुत कीमती होती है, इसीलिये औसत आर्थिक स्थिति के छात्र छात्राओं में ऐसा नहीं लगता है। कि उतना धन वे व्यय कर सकेंगे। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है, उनको जेब खर्च भी अधिक मिलता है। छात्रावास में रहने पर भी उनको घर से अधिक पैसे मिल जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कुछ समय के लिये कुछ कार्य भी कर लेते हैं।

जिससे इनकी आर्थिक स्थिति सम्भल जाती है और नशे पर खर्च हो जाती है। तत्पश्चात फटे हाल हो जाते हैं। यहाँ तक सुना जाता है, कि यह लोग चोरी भी कर लेते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ–साथ इस परिकल्पना को स्वीकार कर लिया गया था।

इस शोध का अन्तिम व नवम् उददेश्य यह ज्ञात करना था, कि 'क्या किशोरावस्था में ही नशीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्र होते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्न परिकल्पना थी, कि किशोरावस्था में ही नषीली दवाओं तथा मदात्ययी व्यसनी छात्र होते हैं।'

जितने भी व्यक्तिगत अध्ययन, अस्पतालों का लेखा झोखा आदि से जो भी तथ्य एकत्रित किये गये उनमें से किसी की भी आयु 24–25 वर्ष से अधिक नहीं थी। साथ ही 15–16 वर्ष से कम नहीं थी। इस अवस्था में भावुकता अधिक शक्तिशाली होती है और तार्किक शक्ति कार्य नहीं करती है।

इसीलिये चोरी, डकैती, तस्करी आदि जैसे अनैतिक कार्यको यह लोग बड़ी सरलता से कर लेते हैं। भीमसेन का कहना है कि 50 वर्ष से अधिक आयु में यह आदतें नहीं बनती हैं। इन्होंने इसी सन्दर्भ में आगे कहा कि 50 या उससे ऊपर के व्यक्तियों में अनुभव के साथ–साथ तार्किक शक्ति भी बढ़ जाती है। इसलिये उनका अपने पर नियन्त्रण होता है।

इच्छाशक्ति भी अत्यन्त तीव्र होती है। वह भी उनको इन कार्यो से रोकती है। फलतः

वह मदात्ययी तथा औषध व्यसनी नहीं हो पाते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ–साथ इस परिकल्पना को स्वीकारा गया।

संदर्भ

1. कौलमैन, जै0सी0 : ''साइको एण्ड इफैक्टिव वेयवियर'' गिलीन न्यू, इस्कार्ट फौरमैन एण्ड को, 1969।
2. कौलमैन, जे0सी0: ''एवनार्मल साइक्लौजी एण्ड मौडर्न लाइफ'' डी0वी0 438, 439, 420, 1970।
3. रिसिकन, एच0ए0 एड क्रिस्टन एच0: ''ड्रग डिपैन्डैन्स ड्रैयेट'', डब्लू एस0यू0पी0 1970।
4. वे0 एल0 डब्लू: 'दि ड्रगसीन हैल्थ एण्ड हैग्प, एगिंल वुड क्लिप्स पैरिन्टिस हॉल, न्यूयार्क, 1970।
5. चिटनिस, एस : ''ड्रग ऑन कालिज कैम्पस'' टाटा इन्स्टीट्यूड ऑफ सोशल साइन्सिस बौम्बे 1974।
6. एन्ड्रूज, जी, : ''ड्रग्स एण्ड मैजिक'', पैन्थर 1975।
7. विलसन आर0 ए0 : ''सेक्स एण्ड ड्रग्स'' मेफलावर 1975।
8. मैनेजमेन्ट साइकोसिस फार हैल्थ, मैनिजिंग ड्रग सप्लाई, बोस्टन यू0एस0ए0 1982।
9. बच्चन, हरवंशराय,: ''मधुशाला'', हिन्दी पॉकेट बुक्स, 32 वाँ संस्करण जी0टी0 रोड, शाहदजा, पद 83, पृष्ठ 93, सन् 1985।
10. खान, एम0 जेड0 : ''ड्रग यूज अमंग्स दि कालिज'' दि बुक सेन्टर लिमिटेड, बम्बई 1985।
11. कैफर, कमेटी: ''हीयरिंग आन ड्रग्स'' यू0एस0ए0 1988।
12. ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'', व्यवनाधिकारिक अष्ठम् अधिकरण पुरूष व्यसन वर्ग पृष्ठ सं0 150, डायमण्ड पाकेट बुक्स, 1989।
13. भीमसेन: ''एलकोहलिक एडिक्शन'' उच0के0 पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली 1989।